ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ

ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ

First published 2026
This book is copyright free

This booklet is a Hindi Translation of Maulana Wahiduddin Khan's English booklet entitled *Creation Plan of God*.

Goodword Books
A-21, Sector 4, Noida-201301, Delhi NCR, India
Tel. +91 120 4131448, Mob. +91 8588822672
info@goodwordbooks.com
www.goodwordbooks.com

CPS International
Centre for Peace and Spirituality International
1, Nizamuddin West Market, New Delhi-110 013, India
Mob. +91-9999944119
info@cpsglobal.org
www.cpsglobal.org

Center for Peace and Spirituality USA
391 Totten Pond Road, Suite 402,
Waltham MA 02451, USA
Mob. 617-960-7156
email: info@cpsusa.net

विषय सूची

ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना	4
सकारात्मक व्यक्तित्व का विकास	7
विचार करने योग्य कुछ बातें	13
सबके लिए एक जैसा आदर्श (Universal Model)	15
मनुष्य की खोज	18
माफ़ कीजिए, यह नंबर मौजूद नहीं है	20
ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव	23
एकेश्वरवाद (तौहीद)	25
मनुष्य के लिए ईश्वर की योजना	27
यहाँ परीक्षा के लिए	29
मनुष्य की परीक्षा	31
मनुष्य की क्षमता का मूल्यांकन	32
केवल एक अवसर	33
व्यक्तित्व का विकास	35
फूल और काँटे	38
यह विरोधाभास क्यों?	42
निष्कर्ष	46

ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना

वर्तमान संसार को मनुष्य के लिए एक परीक्षा-स्थल के रूप में बनाया गया है। यदि वह इस परीक्षा में सफल होता है, तो मृत्यु के बाद अनंत जीवन में उसे आदर्श लोक, अर्थात् जन्नत में स्थान प्राप्त होगा।

एक दार्शनिक (philosopher) ने एक बार टिप्पणी की थी कि ऐसा प्रतीत होता है कि इस विशाल ब्रह्मांड में मनुष्य एक अजनबी-सा अस्तित्व है। ऐसा लगता है कि न तो मनुष्य इस संसार के लिए बनाया गया है और न ही यह संसार मनुष्य के लिए बनाया गया है। मनुष्य और संसार परस्पर एक-दूसरे के अनुकूल प्रतीत नहीं होते।

मनुष्य अपार क्षमताओं के साथ जन्म लेता है। किंतु वह इस वर्तमान संसार में इन क्षमताओं का केवल एक अत्यंत सीमित भाग ही उपयोग करता है। मनुष्य अपने स्वभाव से सदा जीवित रहना चाहता है। परंतु मृत्यु उसकी अनुमति के बिना ही अचानक आ पहुँचती है और मनुष्य को उसकी इच्छा के विरुद्ध अपने साथ ले जाती है। मनुष्य के हृदय में इच्छाओं का एक महासागर है, लेकिन इनमें से सभी इच्छाएँ पूरी नहीं होतीं। प्रत्येक मनुष्य का मस्तिष्क सपनों की एक दुनिया है, लेकिन सभी सपने साकार नहीं होते। इस संदर्भ में 'बड़े' और 'छोटे' लोगों में कोई अंतर नहीं है। जैसा कि उल्लेखित दार्शनिक के विचार से प्रतीत होता है, यह सब इस ओर संकेत करता है कि मानो मनुष्य ऐसे संसार में आ गया है जो उसके लिए बनाया ही नहीं गया।

मनुष्य और वर्तमान संसार एक-दूसरे के इतने प्रतिकूल क्यों प्रतीत होते हैं? इस पहेली को सुलझाने के लिए, हमें ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना को समझने की आवश्यकता है। मनुष्य और संसार के बीच दिखने वाले इस तालमेल के अभाव का प्रश्न ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना को न जानने के कारण उत्पन्न होता है। इसलिए, हम ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना को समझकर मनुष्य के लिए एक संतोषजनक उत्तर प्राप्त कर सकते हैं।

ईश्वर ने अपनी योजना के अनुसार मनुष्य की रचना की है। मनुष्य की उचित व्याख्या के लिए इस योजना को जानना आवश्यक है। किसी मशीन के महत्व को तभी जाना जा सकता है जब हम उसे बनाने वाले इंजीनियर के इरादे को देखते हैं। इंजीनियर के मस्तिष्क के अलावा और कुछ भी मशीन के महत्व और उद्देश्य को स्पष्ट नहीं कर सकता है। यही बात मनुष्य के बारे में भी सच है।

ईश्वर ने मनुष्य को एक विशिष्ट योजना के लिए बनाया है। इस योजना के अनुसार, मनुष्य को परीक्षा के उद्देश्य से वर्तमान के अपूर्ण संसार में एक निर्धारित समय व्यतीत करना होगा, और इसके बाद, अपने कर्मों के अनुरूप, मनुष्य को एक आदर्श संसार में रहने का अधिकार प्राप्त होगा, जिसे जन्नत कहा जाता है, अन्यथा वह सदैव के लिए सुख-सुविधाओं से वंचित स्थान की ओर धकेल दिया जाएगा।

वर्तमान संसार को मनुष्य के लिए एक परीक्षा-स्थल के रूप में बनाया गया है। यहाँ मनुष्य निरंतर परीक्षा दे रहा है। यदि वह इस परीक्षा में सफल होता है, तो मृत्यु के बाद अनंत जीवन में उसे आदर्श संसार (जन्नत) में स्थान मिलेगा। दूसरी ओर, यदि वह इस परीक्षा में विफल रहता है, तो वह सदैव के लिए सुख-सुविधाओं से वंचित रहेगा। जन्नत में प्रवेश पाने के योग्य होने के लिए, पृथ्वी पर रहते हुए मनुष्य

को दो कार्य करने की आवश्यकता है। एक है सत्य को स्वीकार करना, और दूसरा है एक सिद्धांतवादी जीवन जीना।

वर्तमान संसार में मनुष्य अपने को पूरी तरह स्वतंत्र पाता है। किंतु यह स्वतंत्रता उसे अधिकार के रूप में नहीं दी गई है। बल्कि यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक प्रकार का प्रश्न-पत्र है। मनुष्य को बिना किसी दबाव के सत्य को स्वीकार करना होता है। बिना किसी बाध्यता के उसे सत्य के सामने सिर झुकाना होता है। मनुष्य को उसकी परीक्षा के लिए चयन की स्वतंत्रता दी गई है। उसे अपने ही चुनाव द्वारा अपनी स्वतंत्रता को सीमित और नियंत्रित करना चाहिए। सत्य के सामने झुकना निस्संदेह मनुष्य के लिए सबसे बड़ा त्याग है। सत्य को स्वीकार करना देखने में ऐसा लग सकता है मानो मनुष्य अपने को दूसरों की तुलना में छोटा बना रहा हो, किंतु वास्तव में यही उसे सर्वोच्च स्थान तक पहुँचा देता है और जन्नत के द्वार तक ले जाता है।

इस संदर्भ में मनुष्य को जो दूसरा काम करना है, वह है सिद्धांतों पर आधारित जीवन व्यतीत करना। सामान्यतः व्यक्ति का चरित्र उसकी भावनाओं के अनुसार बनता है। क्रोध, प्रतिशोध, ईर्ष्या, घृणा, अवसरवादिता आदि—ये नकारात्मक भावनाएँ प्रायः किसी व्यक्ति के चरित्र को स्थायी रूप से ढाल देती हैं। ऐसे भावों से निर्मित चरित्र के साथ कोई भी व्यक्ति जन्नत में प्रवेश नहीं कर सकता। जन्नत में प्रवेश के लिए उसे उत्तम चरित्र का व्यक्ति होना चाहिए। इसके लिए मनुष्य को अपने चरित्र का निर्माण बाहरी परिस्थितियों के अधीन नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे कुछ नैतिक सिद्धांतों का पालन करके अपने चरित्र का निर्माण करना चाहिए। केवल ईमानदार चरित्र वाले लोग ही मृत्यु के बाद के जीवन में जन्नत में प्रवेश करने और वहाँ रहने के योग्य ठहराए जा सकते हैं। यही वह सृष्टि-निर्माण योजना है जिसके अंतर्गत मनुष्य को पैदा किया गया है।

जन्नत वह आदर्श संसार है जहाँ मनुष्य को पूर्ण शांति और संतोष प्राप्त होगा और वह उन लोगों की संगति में रहेगा जो उसके जीवन को वास्तव में अर्थपूर्ण बनाते हैं। इस जन्नत की इच्छा हर व्यक्ति के हृदय में बसी हुई है। यही वह जन्नत है जहाँ मनुष्य को संपूर्ण तृप्ति प्राप्त होगी। अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ मनुष्य इसी जन्नत की खोज में है। और जन्नत भी अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ ऐसे लोगों की प्रतीक्षा कर रही है। वह समय आने वाला है जब जन्नत और मनुष्य एक-दूसरे से मिलेंगे। प्रत्येक को वह जोड़ी मिलेगी जो उसके लिए बनाई गई है।

सकारात्मक व्यक्तित्व का विकास

> सत्य को प्राप्त करने की महान आकांक्षा उसी व्यक्ति में जागृत होती है, जिसकी सोच सकारात्मक होती है। अंततः सत्य तक वही पहुँचता है, जिसका चरित्र भी सकारात्मक हो और दृष्टिकोण भी सकारात्मक।

ज्यां जाक रूसो (Jean Jacques Rousseau) (1712–1778) एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी विचारक थे। वे राजतंत्र के स्थान पर जनता के शासन के समर्थक थे। उनका प्रसिद्ध कथन है: "मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है, और हर जगह वह जंजीरों में जकड़ा हुआ है।" (सोशल कॉन्ट्रैक्ट, 1762)

हालाँकि, मनुष्य के पास एक और समस्या है, जो शायद इससे भी अधिक गंभीर है। वह है कंडीशनिंग (मानसिक अनुकूलन) की समस्या। प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष वातावरण में रहता है। इसलिए, हर व्यक्ति का मस्तिष्क उसके वातावरण से अनुकूलित हो जाता है, जो उसे सही सोच से वंचित कर देता है। परिणामस्वरूप,

लोग स्वाभाविक रूप से सोचने में सक्षम नहीं रह जाते। अनुकूलन की इस समस्या को देखते हुए, रूसो के कथन को बेहतर ढंग से इस प्रकार कहा जा सकता है: "मनुष्य की रचना ईश्वरीय स्वभाव (फितरत) पर हुई थी, लेकिन मैं उसे मनोवैज्ञानिक रूप से अनुकूलित (conditioned) देखता हूँ"

जब कोई बच्चा अपनी माँ के गर्भ से जन्म लेता है, तो वह मासूमियत का साक्षात् रूप दिखाई देता है। ऐसा लगता है मानो किसी फ़रिश्ते ने मानव रूप धारण कर लिया हो। जन्म के समय मनुष्य का मस्तिष्क पूर्णतः शुद्ध होता है। उसका चिंतन स्वाभाविक होता है, जैसा कि वास्तव में होना चाहिए। किन्तु मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे अपना पूरा जीवन दूसरों द्वारा बनाए गए समाज में बिताना पड़ता है। इसी कारण उसके मस्तिष्क पर लगभग हर जागते हुए क्षण बाहरी प्रभाव पड़ते रहते हैं। इसे ही कंडीशनिंग कहा जाता है। बाहरी वातावरण से प्रभावित होने की यह प्रक्रिया तब तक बढ़ती रहती है जब तक कि मनुष्य पूरी तरह से अनुकूलित (conditioned) नहीं हो जाता।

सत्य की खोज में, साधक को इस अनुकूलन (conditioning) को समझने की आवश्यकता है, और उसके अनुसार, उसे अपने मन को मानसिक बंधनों से मुक्त करने (deconditioning) में लग जाना चाहिए ताकि वह इसे इसकी स्वाभाविक अवस्था में वापस ला सके। उसे बनावटी व्यक्ति बने रहने के बजाय स्वाभाविक और प्राकृतिक मनुष्य बनना चाहिए।

हाल ही में, मनोविज्ञान में जिस विचार ने ज़बरदस्त लोकप्रियता हासिल की है, उसे व्यवहारवाद (behaviourism) कहा जाता है। मनोविज्ञान के इस संप्रदाय में, यह माना जाता है कि अनुकूलन मनुष्य की एक स्थायी स्थिति है। यह ऐसा है

मानो मनुष्य अपने अनुकूलन का कैदी हो और केवल उसका एक निष्क्रिय उत्पाद (passive product) है।

मनुष्य के व्यक्तित्व का गहन अध्ययन इस सिद्धांत को असत्य सिद्ध करता है। आनुवंशिक कोड (Genetic Code) के बारे में हुई हाल की खोजें इस धारणा पर गंभीर प्रश्न खड़े करती हैं। यह सिद्ध हो चुका है कि प्रत्येक व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तित्व जन्म के समय ही उसके आनुवंशिक कोड में विद्यमान होता है। इसके अतिरिक्त, जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, उसके व्यक्तित्व का विकास केवल उसी आनुवंशिक कोड का खुलना मात्र होता है। यदि यह सत्य है, तो यह कहना अधिक उचित होगा कि वातावरण द्वारा की गई कंडीशनिंग मनुष्य की वास्तविक प्रकृति पर डाला गया एक बनावटी परदा है।

मानो मनुष्य का चरित्र एक प्याज़ की तरह है। प्याज़ के भीतर एक गुठली जैसा बल्ब (kernel) होता है। इस आंतरिक 'बल्ब' के ऊपर त्वचा जैसी कई परतें होती हैं। यदि इन परतों को हटा दिया जाए, तो प्याज़ का भीतरी सार प्रकट हो जाएगा। यही बात मनुष्य के साथ भी है। कंडीशनिंग के कारण मनुष्य के वास्तविक अस्तित्व पर बाहरी वातावरण से बने हुए बनावटी परदे पड़ जाते हैं। यदि इन परदों को हटा दिया जाए, तो मनुष्य का सच्चा और स्वाभाविक व्यक्तित्व प्रकट हो जाएगा।

मनुष्य के व्यक्तित्व पर पड़े हुए इन बाहरी परदों को हटाने की प्रक्रिया को डीकंडीशनिंग कहा जाता है। सत्य की खोज करने वाले व्यक्ति के लिए यह अनिवार्य है कि वह कंडीशनिंग से बने उन बनावटी परदों को हटाए, जो उसके वास्तविक अस्तित्व को ढक देते हैं, ताकि उसकी असली और स्वाभाविक

प्रकृति फिर से प्रकट हो सके।

धर्म हमें बताता है कि मनुष्य ईश्वर की एक बेमिसाल रचना है। अपने अंतर्मन से इंसान सच्चा और पूर्ण प्राणी होता है। इस ज़िंदगी में हमेशा कामयाब रहने के लिए ज़रूरी है कि वह अपनी असली फ़ितरत को सँभालकर रखे। उसे वैसा ही बना रहना चाहिए, जैसा उसके रब ने उसे बनाया है। इस प्राकृतिक अवस्था में बने रहने के लिए यह आवश्यक है कि उन सभी चीज़ों को हटा दिया जाए, जो उस पर बनावटी परदों का काम करती हैं। यही डीकंडीशनिंग कहलाती है।

जब मनुष्य किसी विशेष वातावरण में पलता है, तो वह प्रतिदिन विभिन्न नकारात्मक परिस्थितियों और अनुभवों का सामना करता है। ये परिस्थितियाँ और अनुभव उसके चरित्र पर अनचाहा प्रभाव डालते रहते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई उससे आगे बढ़ जाए, तो वह ईर्ष्या करने लगता है। अब ईर्ष्या उसके चरित्र में प्रवेश कर जाती है। यदि कोई उसके साथ दुर्व्यवहार करे, तो वह घृणा से प्रतिक्रिया करता है। घृणा उसके चरित्र का हिस्सा बन जाती है। यदि कोई उस पर अत्याचार करे, तो उसके चरित्र में हिंसा की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है। इस प्रकार हिंसा भी उसके चरित्र का हिस्सा बन जाती है, और इसी तरह आगे चलता रहता है।

इस प्रकार मनुष्य विभिन्न अनुभवों से गुज़रता है और उन पर नकारात्मक प्रतिक्रिया देता है। हर बार जब वह ऐसा करता है, तो उसके चरित्र में एक हानिकारक तत्व प्रवेश कर जाता है और उसे उसी अनुरूप ढाल देता है। इस प्रकार समय के साथ मनुष्य का वास्तविक चरित्र एक परदे के पीछे छिप जाता है। परिणामस्वरूप मनुष्य एक प्राकृतिक व्यक्ति से बदलकर एक बनावटी व्यक्ति बन जाता है।

डीकंडीशनिंग इसी बनावटी अवस्था का सुधार है। यह डीकंडीशनिंग हर व्यक्ति की एक अत्यंत आवश्यक ज़रूरत है। इसके बिना मनुष्य का चरित्र गम्भीर रूप से दोषपूर्ण बना रहेगा। वह कभी भी पूर्ण चरित्र के स्तर तक नहीं पहुँच सकेगा।

डीकंडीशनिंग का मुख्य साधन आत्मनिरीक्षण (introspection) है। प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं का निरीक्षक बनना चाहिए। सबसे पहले उसे अपने भीतर गहराई से झाँकना चाहिए और जो भी नकारात्मक तत्व उसे मिले, उसे निकाल देना चाहिए। इसके बाद उसे इन नकारात्मक तत्वों को सकारात्मक में बदलकर अपने चिंतन को सुधारना चाहिए। फिर इन परिवर्तित सकारात्मक तत्वों को अपने व्यक्तित्व में सम्मिलित कर लेना चाहिए। यह प्रक्रिया उस पशु के समान है, जो जुगाली करता है—भोजन को मुँह से निकालकर फिर चबाता है ताकि वह पचने योग्य बन जाए। इसी प्रकार, डीकंडीशनिंग के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को अपने चरित्र का पुनर्निर्माण सकारात्मक आधार पर करना चाहिए।

मनुष्य के मस्तिष्क के दो मुख्य भाग होते हैं: चेतन (conscious) और अवचेतन (unconscious)। उदाहरण के लिए, जब किसी व्यक्ति को कोई अप्रिय अनुभव होता है, तो उससे संबंधित विचार एक नकारात्मक तत्व के रूप में चेतन मस्तिष्क में प्रवेश करता है। यह नकारात्मक तत्व कुछ दिनों तक चेतन मस्तिष्क में रहता है। इसके बाद धीरे-धीरे यह अवचेतन मस्तिष्क में चला जाता है, जहाँ यह सदा के लिए मस्तिष्क का हिस्सा बन जाता है। इसलिए आवश्यक है कि पहले ही दिन, या अधिक से अधिक कुछ ही दिनों के भीतर, मनुष्य अपने मस्तिष्क में मौजूद हर नकारात्मक तत्व को सकारात्मक में बदल दे, ताकि जब वह चेतन मस्तिष्क से गुज़रकर अवचेतन मस्तिष्क या स्मृति के भंडार में पहुँचे, तो वह वहाँ एक सकारात्मक तत्व के रूप में सुरक्षित हो।

यही प्रक्रिया किसी व्यक्ति के चरित्र-निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाती है। यही प्रक्रिया तय करती है कि किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व सकारात्मक होगा या नकारात्मक। व्यक्ति को प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण करना चाहिए, ताकि वह अपने नकारात्मक अनुभवों को सुधार सके और उन्हें सकारात्मक में बदल सके। परिणामस्वरूप ये तत्व उसके अवचेतन मस्तिष्क या स्मृति-कोष (store house of memory) में सकारात्मक रूप में संचित हो जाएँगे। जो व्यक्ति नियमित रूप से इस प्रक्रिया में लगा रहता है, उसका चरित्र अत्यंत सकारात्मक बन जाता है। यदि वह इस सुधार की प्रक्रिया को नहीं अपनाता, तो उसके सभी नकारात्मक अनुभव उसके अवचेतन मस्तिष्क में नकारात्मक तत्वों के रूप में जमा हो जाएँगे। इसका परिणाम यह होगा कि उसका चरित्र नकारात्मक बन जाएगा।

मनुष्य जो भी कार्य करता है, चाहे वह विचार में हो, शब्द में हो या कर्म में, वह उसके अवचेतन मस्तिष्क के अनुसार होता है। मनुष्य का व्यक्तित्व मुख्यतः उसके अवचेतन मस्तिष्क से निर्धारित होता है, न कि केवल उसके चेतन मस्तिष्क से। जिस व्यक्ति का अवचेतन मस्तिष्क नकारात्मक तत्वों का भंडार बन चुका होता है, उसके विचार, शब्द और कर्म नकारात्मक होते हैं। इसके विपरीत, जिस व्यक्ति का अवचेतन मस्तिष्क सकारात्मक तत्वों का भंडार बन चुका होता है, उसके विचार, शब्द और कर्म स्वस्थ और सकारात्मक होते हैं, क्योंकि उसने इसके लिए निरंतर प्रयास किया होता है।

सत्य की खोज एक सकारात्मक व्यक्तित्व की क्रिया है। सत्य की खोज की महान आकांक्षा उसी व्यक्तित्व में जागृत होती है जो सकारात्मक होता है। और अंततः

केवल वही व्यक्ति सत्य तक पहुँचता है, जिसका चरित्र सकारात्मक और चिंतन सकारात्मक होता है।

विचार करने योग्य कुछ बातें

> अपने जीवन की योजना बनाने और उसे सही अर्थों में जीने का एकमात्र सही मार्ग वही है, जो मृत्यु के बाद के संसार में मनुष्य के अनंत जीवन को भी ध्यान में रखता हो।

रसायन विज्ञान (chemistry) का एक प्रारंभिक पाठ, जो हर विद्यार्थी सीखता है, यह है: "कुछ भी नष्ट नहीं होता, वह केवल अपना रूप बदलता है।"

मनुष्य के लिए इस सार्वभौमिक नियम (universal law) से अपवाद होने का कोई कारण नहीं है। भौतिक पदार्थ के बारे में हम जानते हैं कि वह जलने, फटने या किसी अन्य दुर्घटना से नष्ट नहीं होता। वह केवल अपना रूप बदलता है, अपना अस्तित्व बनाए रखता है। इसी प्रकार, हमें मनुष्य को भी एक ऐसे प्राणी के रूप में समझना चाहिए जो नष्ट होने वाला नहीं है। अर्थात् उसके शरीर की मृत्यु को उसके अस्तित्व का अंत नहीं माना जा सकता।

यह कोई अप्रत्यक्ष कल्पना नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी वास्तविकता है जो प्रत्यक्ष अनुभव से सिद्ध होती है। उदाहरण के लिए, कोशिका-विज्ञान (Cytology) हमें बताता है कि मनुष्य का शरीर करोड़ों-करोड़ों सूक्ष्म कोशिकाओं (cells) का एक संग्रह है। ये कोशिकाएँ निरंतर विघटित होती रहती हैं, अर्थात मरती रहती हैं। औसत कद के मनुष्य के शरीर में लगभग 26 ट्रिलियन कोशिकाएँ होती हैं।

ये कोशिकाएँ किसी इमारत की ईंटों की तरह नहीं हैं, जो इमारत के बने रहने तक वहीं रहती हैं। बल्कि प्रतिदिन बहुत बड़ी संख्या में कोशिकाएँ मर जाती हैं और हमारा भोजन नई कोशिकाओं को उनकी जगह लेने में सक्षम बनाता है। मानव शरीर की कोशिकाओं के इस निरंतर मरते रहने से यह सिद्ध होता है कि औसतन हर दस वर्ष में पूरा मानव शरीर एक बिल्कुल नए शरीर में बदल जाता है।

मानो दस वर्ष पहले जिस हाथ से मैंने किसी समझौते पर हस्ताक्षर किए थे, वह हाथ अब मेरे शरीर का हिस्सा ही नहीं रहा, फिर भी उस "मेरे पुराने हाथ" द्वारा किया गया समझौता आज भी मेरा ही समझौता है। शरीर के बदल जाने के बावजूद भीतर का 'मैं' उसी अवस्था में बना रहता है। मेरा ज्ञान, मेरी स्मृतियाँ, मेरी इच्छाएँ, मेरी आदतें और मेरे विचार सब सुरक्षित रहते हैं। इसी कारण किसी ने ठीक ही कहा है:

"व्यक्तित्व परिवर्तन के बीच स्थिरता का नाम है।" (द यूरेंशिया बुक)

यदि शरीर की मृत्यु ही जीवन का पूर्ण अंत होती, तो वही 'मृत्यु' किसी न किसी रूप में हर दिन उस व्यक्ति के साथ घटती है जिसे हम अभी भी जीवित मानते हैं। एक 60 वर्ष के व्यक्ति को देखिए जो हमारे सामने चल रहा है। उसके शरीर की कोशिकाओं के अर्थ में वह पहले ही छह बार 'मर चुका' है। अब यदि शरीर की इस प्रकार की 'मृत्यु' छह बार हो जाने के बाद भी वह व्यक्ति जीवित है, तो सातवीं 'मृत्यु' से वह कैसे मर जाएगा, जब वह शरीर को हमेशा के लिए छोड़ देगा?

सच्चाई यह है कि मनुष्य एक शाश्वत प्राणी (eternal being) है। वह अपनी शारीरिक मृत्यु के बाद भी जीवित और उपस्थित रहता है। मनुष्य का सचेतन

अस्तित्व उसकी मृत्यु के बाद भी जारी रहता है। मृत्यु जीवन का अंत नहीं है। यह केवल जीवन के अगले चरण में एक प्रवेश द्वार है। जब मनुष्य मरता है, तो उसका शाश्वत अस्तित्व मृत्यु के बाद की दुनिया में प्रवेश करता है। इसलिए, इस संसार में जीवन की योजना बनाने और उसे जीने का सही तरीक़ा केवल वही हो सकता है जो मृत्यु के बाद की दुनिया में मनुष्य के अनंत जीवन को समाहित करता हो।

सबके लिए एक जैसा आदर्श
(UNIVERSAL MODEL)

> ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण ही इस संसार में मनुष्य के लिए जीवन जीने का सर्वोत्तम तरीक़ा है। और यही समर्पण मृत्यु के बाद के शाश्वत जीवन में उसकी सफलता की भी गारंटी देता है।

मनुष्य स्वयं को एक विशाल ब्रह्मांड में पाता है। यह ब्रह्मांड एक विशाल समाज के समान है। और मनुष्य इस समाज का केवल एक छोटा-सा हिस्सा है। इसलिए मनुष्य को जीवन जीने का वही ढाँचा अपनाना चाहिए, जिसे इस ब्रह्मांड के अन्य सभी घटकों ने व्यवहार में अपनाया हुआ है। यही उसके लिए सही और स्वाभाविक मार्ग है। इसी पद्धति में मनुष्य की सफलता का रहस्य छिपा हुआ है।

यह सार्वभौमिक आदर्श क्या है? विशाल अंतरिक्ष में फैले हुए तारों और ग्रहों को देखिए। प्रत्येक तारा और प्रत्येक ग्रह अपनी कक्षा (orbit) में अत्यंत सटीकता के साथ गति करता है। उनमें से कोई भी दूसरे की कक्षा में प्रवेश नहीं करता। इसी अनुशासन के कारण पूरे ब्रह्मांड में शांति बनी रहती है। ईश्वर चाहता है

कि मनुष्य भी समाज में रहते हुए और दूसरों के साथ व्यवहार करते समय इसी बिना-हस्तक्षेप (non-interference) की नीति को अपनाए। हर व्यक्ति को यह जानना चाहिए कि उसकी स्वतंत्रता वहीं समाप्त हो जाती है, जहाँ से दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता आरंभ होती है।

पेड़ों की दुनिया पर विचार कीजिए। पेड़ों ने मौन रूप से दूसरों की सेवा पर आधारित एक सुंदर व्यवस्था अपना रखी है। वे अन्य जीवों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ऑक्सीजन प्रदान करते हैं और उन जीवों द्वारा छोड़ी गई अवांछनीय कार्बन डाइऑक्साइड को अपने भीतर समाहित कर लेते हैं। यह एक निःस्वार्थ, उपकार करने वाली व्यवस्था है। मनुष्य के लिए भी यह अनिवार्य है कि वह अपने जीवन में इसी व्यवस्था को अपनाए।

इसी तरह, पर्वतीय झरनों के बारे में सोचें, जिनका पानी फूटकर निकलता है और तेज़ी से आगे बहता है। उन्हें बार-बार विशाल चट्टानों का सामना करना पड़ता है जो उनकी यात्रा में बाधा की तरह दिखाई देती हैं। हालाँकि, झरने आगे बढ़ने के लिए चट्टानों को अपने रास्ते से हटाने की कोशिश नहीं करते हैं। इसके बजाय, वे एक बिना-टकराव (non-confrontational) वाला मार्ग अपनाते हैं। वे चट्टानों के चारों ओर घूमकर रास्ता बनाते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। यह, मानो मनुष्य के लिए एक संदेश है कि वह जीवन में आने वाली बाधाओं से टकराने से बचे। सही दृष्टिकोण यह है कि चतुराई के साथ उनसे बचकर निकल जाएं और इस तरह सकारात्मक कार्यों में लगे रहने में सक्षम हों।

इसी तरह, पशुओं की दुनिया में हम देखते हैं कि उनके बीच बार-बार ऐसे मुद्दे उठते हैं जो उनके बीच संघर्ष का कारण बनते हैं। हालाँकि, आम तौर पर, वे थोड़ी

देर के लिए दहाड़ते और गुर्राते हैं या अपने सींग हिलाते हैं, और फिर वे उस मुद्दे को भूल जाते हैं और जल्दी ही सामान्य स्थिति में लौट आते हैं जैसे कि कुछ हुआ ही न हो। मनुष्य को भी समाज में इसी तरह रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में, बार-बार ऐसी चीजें होती हैं जो लोगों को परेशान करती हैं। इससे निपटने का सही तरीक़ा इन स्थितियों को अस्थायी रूप से स्वीकार करना है। व्यक्ति को उन्हें स्थायी कड़वाहट का रूप नहीं लेने देना चाहिए।

प्रकृति की दुनिया का अध्ययन हमें बताता है कि हर चीज़ दूसरों को देती है, बिना किसी बदले की माँग किए। उदाहरण के लिए, सूर्य हमें उदारतापूर्वक प्रकाश देता है, किंतु उसका कोई मूल्य नहीं वसूल करता। हवा निरंतर हमें ऑक्सीजन प्रदान करती है, परंतु वह कोई मुआवज़ा नहीं लेती। इसी तरह, कई जीव और वस्तुएं बिना किसी प्रतिफल के लोगों की सेवा में लगे हुए हैं। उनमें से कोई भी उनसे लाभ उठाने वालों के सामने कोई बिल प्रस्तुत नहीं करता। इससे यह शिक्षा मिलती है कि हमारे चारों ओर की दुनिया एक देने वाली दुनिया है। मानो इस संसार की संस्कृति ही देने की संस्कृति हो। इस संसार की हर वस्तु निरंतर यह संदेश देती है—सिर्फ़ लेने वाले मत बनो, बल्कि दूसरों को देने वाले बनो।

मनुष्य को अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में इसी देने की संस्कृति को अपनाना चाहिए। उसके चारों ओर का ब्रह्मांड इस विषय में उसके लिए एक आदर्श नमूना है। इसी आदर्श को अपनाने में मनुष्य की सफलता का रहस्य छिपा हुआ है। अंतर केवल इतना है कि शेष सृष्टि में यह समर्पण प्राकृतिक नियमों के अंतर्गत अनिवार्य रूप से स्थापित है, जबकि मनुष्य को इस सार्वभौमिक समर्पण के आदर्श को अपनी स्वतंत्र इच्छा से, सचेत रूप में अपनाना होता है।

अपनी स्वतंत्र इच्छा को इस सार्वभौमिक अनुशासन के अधीन करना, मानो स्वतंत्र होते हुए भी स्वयं को "अस्वतंत्र" बना लेना है। यही समर्पण मनुष्य के लिए जीवन जीने का सर्वोत्तम मार्ग है। और यही समर्पण मृत्यु के बाद के शाश्वत जीवन में उसकी सफलता की भी गारंटी देता है।

मनुष्य की खोज

> मनुष्य का जीवन दो चरणों में बँटा है—मृत्यु से पहले का समय परीक्षा का है और मृत्यु के बाद का समय पुरस्कार या दंड का। इस सत्य को स्वीकार करके ही मनुष्य सच्ची सफलता प्राप्त कर सकता है।

मनुष्य के मस्तिष्क में लगभग सौ अरब तंत्रिका कोशिकाएँ (one hundred billion nerve cells) होती हैं। यह आश्चर्यजनक तथ्य इस बात का संकेत है कि मनुष्य के पालनहार ने उसके भीतर अपार क्षमताएँ रखी हैं।

इसके साथ ही मनुष्य को एक ऐसी विशेष क्षमता दी गई है, जो इस विशाल ब्रह्मांड में किसी और प्राणी को नहीं मिली—सुख और आनंद को गहराई से महसूस करने और उसका आनंद लेने की क्षमता।पूरे ब्रह्मांड में मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है, जो आनंद को गहराई से समझ सकता है और पूरी तरह महसूस कर सकता है। मनुष्य के लिए लगभग हर चीज़ आनंद का कारण बन सकती है।

ईश्वर ने मनुष्य को अनोखी क्षमताओं के साथ पैदा किया है। और ईश्वर ने एक अत्यंत सुंदर संसार भी बनाया है, जिसे जन्नत कहा जाता है। जन्नत एक पूर्ण संसार है, जहाँ हर प्रकार का आनंद अपने सर्वोत्तम रूप में मौजूद होगा। मानो

मनुष्य और जन्नत एक-दूसरे के पूरक हों। मनुष्य जन्नत के लिए है और जन्नत मनुष्य के लिए है। जन्नत वह स्थान है जहाँ मनुष्य को पूर्ण तृप्ति प्राप्त होगी। इस प्रकार जन्नत वह स्थान है जहाँ मानव स्वभाव अपनी परिपूर्णता को प्राप्त करता है। जन्नत के बिना मनुष्य अर्थहीन है और मनुष्य के बिना जन्नत भी अर्थहीन है। जन्नत के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है और मनुष्य के बिना जन्नत भी अधूरी है।

मनुष्य जन्नत का संभावित निवासी है, किंतु कोई भी व्यक्ति जन्नत को जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में या किसी विशेष सामाजिक समूह का सदस्य होने के कारण प्राप्त नहीं करेगा। जन्नत में प्रवेश की शर्त यह है कि मनुष्य इस संसार में, जो परीक्षा का संसार है, अपने भीतर ऐसे गुण विकसित करे, जिनके आधार पर वह इसके योग्य सिद्ध हो सके।

ईश्वर ने इसी उद्देश्य के लिए वर्तमान संसार को बनाया है। यह एक चयन-स्थल (selection ground) है। इस संसार की परिस्थितियाँ ऐसी बनाई गई हैं कि यहाँ की हर चीज़ मनुष्य के लिए एक परीक्षा-पत्र है। यहाँ हर क्षण मनुष्य की परीक्षा हो रही है। ईश्वर यहाँ प्रत्येक व्यक्ति के हर शब्द और हर कर्म का लेखा-जोखा तैयार कर रहा है। इसी अभिलेख के आधार पर क़यामत के दिन यह फ़ैसला किया जाएगा कि कौन जन्नत में बसने के योग्य है और कौन नहीं।

इस संसार में मनुष्य को पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है। किंतु यह स्वतंत्रता कोई पुरस्कार नहीं है। बल्कि यह परीक्षा के लिए दी गई है। ईश्वर देख रहा है कि मनुष्य अपनी स्वतंत्रता का उपयोग किस प्रकार करता है। ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना के अंतर्गत, जो लोग अपनी स्वतंत्रता का सही उपयोग करेंगे, उन्हें जन्नत में बसने

के लिए चुन लिया जाएगा। और जो लोग अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग करेंगे, वे क़यामत के दिन अस्वीकार किए जाएँगे।

मनुष्य का जीवन दो अवधियों में विभाजित है—मृत्यु से पूर्व की अवधि और मृत्यु के बाद की अवधि। मृत्यु से पूर्व की अवधि परीक्षा की अवधि है, और मृत्यु के बाद की अवधि पुरस्कार की अवधि है। मनुष्य की सफलता या विफलता का रहस्य इस सत्य को जानने और इंसान की कामयाबी का दारोमदार इस हकीकत को पहचानने और इसी नज़रिए के साथ अपनी ज़िंदगी बसर करने पर है।

माफ़ कीजिए, यह नंबर मौजूद नहीं है

> सच्चे ईश्वर से संबंध स्थापित करना मनुष्य के लिए सबसे बड़ी नेमत है। इसके बाद उसे मार्गदर्शन प्राप्त होता है और उसका व्यक्तित्व आध्यात्मिक बनता है।

यदि आप अपने फ़ोन पर किसी का नंबर मिलाएँ और ग़लती से कोई ग़लत बटन दबा दें, तो आपकी कॉल उस व्यक्ति से कनेक्ट नहीं होगी, जिससे आप बात करना चाहते हैं। आपको दूसरी ओर से "हैलो" सुनाई नहीं देगा। बल्कि टेलीफ़ोन एक्सचेंज से एक रिकॉर्ड की हुई आवाज़ आएगी, जो कहेगी: "माफ़ कीजिए, यह नंबर मौजूद नहीं है।"

एक दिन, जब मैं किसी को फ़ोन करने की कोशिश कर रहा था, तब मैंने इस बात को स्वयं अनुभव किया। इस घटना में एक गहरी आध्यात्मिक सीख छिपी हुई थी। वह यह कि यदि कोई व्यक्ति ईश्वर से संबंध स्थापित करना चाहता है, लेकिन

ग़लत सोच के कारण ईश्वर के अलावा किसी और को इबादत के योग्य समझ ले और उसे पुकारे, तो उसे ईश्वर की ओर से कोई उत्तर नहीं मिलेगा। बल्कि उसे एक दूसरी आवाज़ सुनाई देगी, जो बताएगी कि जिस 'ईश्वर' को उसने पुकारा है, वह मौजूद ही नहीं है।

ईश्वर का विचार हर मनुष्य की प्रकृति में रचा-बसा हुआ है। मनुष्य स्वभाव से ही ईश्वर को खोजता है। जन्म से ही हर मनुष्य ईश्वर को पाने की आकांक्षा रखता है। हालाँकि, इतिहास में हमेशा ऐसा हुआ है कि लोगों ने ईश्वर के अलावा किसी और को ईश्वर का दर्जा देने की ग़लती की है।

सच्चे ईश्वर से संबंध स्थापित करना मनुष्य के लिए सबसे बड़ी नेमत है। जिस व्यक्ति का संबंध ईश्वर से स्थापित हो जाता है, उसका जीवन हिदायत के नूर से भर जाता है। उसका व्यक्तित्व रूहानी बन जाता है। वह बौद्धिक रूप से उच्च स्तर की परिपक्वता प्राप्त करता है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति ईश्वर के अलावा किसी और को ईश्वर का दर्जा देता है, वह घोर अंधकार में भटकता रहता है।

आज के समय में हर व्यक्ति किसी न किसी 'ईश्वर' का नाम लेता है, जिनमें धन और शक्ति जैसे 'ईश्वर' भी शामिल हैं। हर व्यक्ति किसी न किसी चीज़ को ईश्वर का दर्जा दे देता है और उसी पर विश्वास करने लगता है। लेकिन सामान्य रूप से लोगों में वास्तविक अर्थों में आध्यात्मिक व्यक्तित्व दिखाई नहीं देता। वे किसी न किसी 'ग़ैर-ईश्वर' को पुकारते हैं, और जवाब में उन्हें यही आवाज़ मिलती है:

> "आपने जो नंबर मिलाया है, वह मौजूद नहीं है। जिसे आप 'ईश्वर' कहकर पुकार रहे हैं, वह तो अस्तित्व ही नहीं रखता!"

हर व्यक्ति की पहली ज़िम्मेदारी यह है कि वह सच्चे ईश्वर की खोज करे और उससे जुड़ने का रास्ता तलाश करे। इस खोज के बिना मनुष्य विनाश की ओर बढ़ने के लिए बाध्य हो जाता है। इसलिए सच्चे ईश्वर की खोज को ही अपने जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य और अपने प्रयासों का केंद्र बनाना चाहिए। यही बात मानव जीवन को अर्थपूर्ण बनाती है। जिस व्यक्ति के जीवन में यह खोज नहीं है, वह वास्तव में सबसे बड़ा निर्धन है, भले ही उसके पास कितनी ही अधिक भौतिक संपत्ति क्यों न हो।

ईश्वर की खोज का अर्थ है एक उच्चतर सत्य की खोज। और इस उच्चतर सत्य की खोज करके ईश्वर से दृढ़ संबंध स्थापित करना ही मनुष्य के जीवन को अर्थ देता है। यदि यह खोज आपके जीवन में नहीं हुई है, तो सही अर्थों में यह नहीं कहा जा सकता कि आपका जीवन अर्थपूर्ण है।

ईश्वर की खोज के बारे में एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात यह है कि यह अवसर मनुष्य को केवल मृत्यु से पहले के जीवन में ही मिलता है। मृत्यु के बाद के समय में, जिन लोगों ने अपने जीवनकाल में ईश्वर को नहीं पाया होगा, वे इस अवसर से वंचित रह जाएँगे। तब बहुत देर हो चुकी होगी।

ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव

हमें अपनी दृष्टि को ऐसा बनाना चाहिए कि हम उसकी सृष्टि में उसकी महानता को पहचान सकें। तब हम हर क्षण ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव कर सकेंगे।

1972 में अपोलो-15 अंतरिक्ष यान से चाँद की यात्रा करने वाले तीन लोगों में एक व्यक्ति कर्नल जेम्स इरविन था। एक साक्षात्कार में उसने कहा कि चाँद पर क़दम रखना उसके लिए एक अद्भुत अनुभव था। उसने कहा कि उसने वहाँ ईश्वर की उपस्थिति को महसूस किया। वह अत्यंत उल्लास से भर गया था और अपने अंतर्मन में कुछ बहुत गहरा अनुभव कर रहा था। उसने कहा कि वह अपनी आँखों से ईश्वर की महिमा को देख पा रहा था। उसके लिए, उसने स्पष्ट किया, चाँद की यह यात्रा केवल एक वैज्ञानिक अभियान नहीं थी, बल्कि उसने उसे एक आध्यात्मिक जीवन का भी उपहार दिया।

कर्नल इरविन का यह अनुभव किसी भी तरह से असामान्य नहीं था। वास्तव में, ईश्वर की बनाई हुई हर चीज़ इतनी आश्चर्यजनक है कि उसे देखकर और यह सोचकर कि इसका रचयिता कितना महान होगा, इंसान विस्मय से भर जाता है। सृष्टि की पूर्णता में हर क्षण ईश्वर की महानता दिखाई देती है। लेकिन बचपन से ही अपने चारों ओर की दुनिया को देखते-देखते हम इसके इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि इसकी विशिष्टता को महसूस नहीं कर पाते। हवा, पानी, पेड़, पक्षी—दुनिया

में जो कुछ भी मौजूद है, वह सब अत्यंत अद्भुत है। सृष्टि की हर एक वस्तु अपने रचयिता का दर्पण है। किंतु हम इनके इतने आदी हो गए हैं कि हमें उनकी अद्भुतता का एहसास ही नहीं होता। लेकिन जब कोई व्यक्ति पहली बार चाँद पर क़दम रखता है और ईश्वर की इस सृष्टि को नए सिरे से देखता है, तो वह ईश्वर की "उपस्थिति" को महसूस किए बिना नहीं रह सकता। वह सृष्टि की कार्यप्रणाली में रचयिता को प्रतिबिंबित होता हुआ देखता है।

हम भी जिस दुनिया में रहते हैं, उसमें ईश्वर की उपस्थिति को उसी तरह अनुभव कर सकते हैं, जैसे कर्नल इरविन ने चाँद पर उतरते समय किया था। लेकिन लोग इस दुनिया को उस विस्मय और आश्चर्य की दृष्टि से नहीं देखते, जिस दृष्टि से कोई व्यक्ति पहली बार चाँद को देखता है। यदि हम अपनी दुनिया को भी उसी दृष्टि से देखने लगें, तो हम हर क्षण ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव करने लगेंगे। तब हम ऐसे जीने लगेंगे, मानो हम ईश्वर की पड़ोस में रह रहे हों और वह हर पल हमारी आँखों के सामने मौजूद हो।

जब हम पहली बार किसी उच्च-स्तरीय मशीन को देखते हैं, तो तुरंत हमें वहाँ किसी कुशल इंजीनियर की उपस्थिति का आभास होता है। उसी प्रकार, यदि हम दुनिया और उसमें मौजूद हर चीज़ को गहराई से देखने लगें, तो उसी क्षण हमें ईश्वर की "उपस्थिति" का अनुभव होगा। रचयिता हमारे सामने इस तरह प्रकट होगा कि हम सृष्टि (creation) और सृष्टि-निर्माता (Creator) को अलग-अलग नहीं कर पाएँगे।

इस संसार में किसी व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि वह ईश्वर को देखने लगे, ईश्वर की निकटता को महसूस करने लगे। यदि वह वास्तव में जीवित

दिल रखता है, तो वह सूर्य की तेज़ किरणों में ईश्वर का नूर देखेगा। वह हरे-भरे वृक्षों में ईश्वर के प्रतिबिंब को पहचानेगा। वह नरम हवाओं के स्पर्श में ईश्वर की मौजूदगी को महसूस करेगा। फिर जब वह सज्दा करेगा और अपनी हथेलियाँ तथा माथा ज़मीन पर रखेगा, तो वह अपने पूरे अस्तित्व को अपने रब के चरणों में समर्पित करने का अनुभव करेगा।

ईश्वर को उसकी सृष्टि में हर जगह देखा जा सकता है। इसलिए हमें ऐसी आँखें प्राप्त करनी चाहिए, जो ईश्वर को उसकी सृष्टि में देख सकें। तब हम हर क्षण ईश्वर की उपस्थिति को महसूस कर सकेंगे।

एकेश्वरवाद (तौहीद)

> हमें सर्वोच्च दर्जा केवल ईश्वर को ही देना चाहिए। अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हमें उसी से माँगना चाहिए। उसी के सामने हमें सिर झुकाना चाहिए और सबसे बढ़कर, उसी पर पूर्ण और निःशर्त भरोसा करना चाहिए।

ईश्वर की एकता पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि यह विश्वास किया जाए कि समस्त शक्ति केवल एक ईश्वर के हाथ में है और केवल वही इबादत के योग्य है। इबादत के स्वरूप में किया गया कोई भी कार्य ईश्वर के अतिरिक्त किसी और के लिए जायज़ नहीं है। वही अकेला ईश्वर है जो हमारी सभी आवश्यकताओं को पूरा करता है। वही पूरे ब्रह्मांड की कार्यप्रणाली के पीछे है। सर्वोच्चता केवल एकमात्र ईश्वर का विशेषाधिकार है। इस संसार में किसी और को वास्तविक अर्थों

में सर्वोच्चता प्राप्त नहीं है। ईश्वर की प्रभुसत्ता के किसी भी पहलू में किसी को या किसी वस्तु को साझीदार ठहराना एक असत्य और भ्रामक धारणा है।

हमें सच्चे ईश्वर, उस सृष्टिकर्ता के प्रति श्रद्धा और इबादत प्रकट करनी चाहिए, जो वास्तव में इसके योग्य है। इसके विपरीत, जब मनुष्य किसी और के सामने सिर झुकाता है, तो वह उसे ऊँचा स्थान दे देता है जो स्वयं उससे बेहतर नहीं है, और इस प्रकार उसे इबादत के योग्य मान लेता है, जबकि वह इसके योग्य नहीं होता। ईश्वर की इबादत उसकी महानता को प्रकट करती है, जबकि ईश्वर के अलावा किसी और की इबादत करना स्वयं इबादत करने वाले को छोटा और अपमानित कर देता है। ईश्वर की इबादत मनुष्य को यथार्थवादी बनाती है, जबकि किसी ग़ैर-ईश्वर के सामने झुकना उसे अंधविश्वास का शिकार बना देता है। ईश्वर के सामने झुकना सत्य को पहचानने का द्वार खोलता है, जबकि ईश्वर के सिवा किसी और की इबादत करना इस द्वार को बंद कर देता है।

हमें सर्वोच्च दर्जा केवल एकमात्र ईश्वर को ही देना चाहिए। हमें अपनी ज़रूरतों के लिए उसी से माँगना चाहिए। उसी का आज्ञाकारी बनना चाहिए। उसी पर पूर्ण भरोसा करना चाहिए, और हर दृष्टि से सर्वोच्चता का स्थान केवल उसी के लिए सुरक्षित रखना चाहिए। इबादत किसी भी संबंध की अंतिम और सर्वोच्च अवस्था है, इसलिए उसका केंद्र केवल ईश्वर ही हो सकता है। इसी कारण किसी भी प्रकार का आदर, श्रद्धा या भक्ति-भाव केवल ईश्वर के लिए ही जायज़ है।

जब कोई मनुष्य ईश्वर को अपनी आराधना का केंद्र बनाता है, तो वह एक ऐसी हस्ती के सामने झुकता है जो हक़ीक़त में मौजूद है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति किसी ग़ैर-ईश्वर को अपनी इबादत का विषय बनाता है, वह ऐसी वस्तु के सामने

झुकता है, जिसका वास्तविक अस्तित्व नहीं है, भले ही उसने अपने तथाकथित 'ईश्वर' की कोई भौतिक प्रतिमा बना रखी हो। पहले मामले में मनुष्य ने शक्ति के एक सच्चे और भरोसेमंद स्रोत को पा लिया होता है, जबकि दूसरे मामले में वह घोर अंधविश्वास से जुड़ जाता है, जिसका तर्क और वास्तविकता से कोई संबंध नहीं होता। ईश्वर के उपासकों को शाश्वत कृपा और आशीर्वाद (नेमतें) प्राप्त होते हैं; जबकि ईश्वर के अलावा अन्य चीज़ों की पूजा करने वालों के हिस्से में स्थायी अभाव और वंचित रहने के सिवा कुछ नहीं आता।

मनुष्य के लिए ईश्वर की योजना

मनुष्य को वर्तमान संसार में परीक्षा के लिए रखा गया है। उसके कर्मों के रिकॉर्ड के आधार पर ही यह तय होगा कि वह शाश्वत जन्नत में सुखपूर्वक रहेगा या फिर पूर्ण अभाव और महरूमी में डाला जाएगा।

हमारे सामने जो ब्रह्मांड विद्यमान है, वह इतना विशाल और महान है कि उसके सामने बाकी सारी चीज़ें तुच्छ प्रतीत होती हैं। इसलिए जब ब्रह्मांड जैसी महान रचना अस्तित्व में आ सकती है, तो उससे छोटी और कम महत्व की बातें क्यों अस्तित्व में नहीं आ सकतीं? इसी संदर्भ में क़ुरआन द्वारा दी गई यह सूचना कि मनुष्य को फिर से जीवित किया जाएगा, पहले से ही इस विशाल सृष्टि के उदाहरणों द्वारा समझ में आने योग्य बन जाती है।

मनुष्य का जीवन दो चरणों में फैला हुआ है—एक इस संसार का वर्तमान जीवन और दूसरा आख़िरत का जीवन, जो अभी हमारी दृष्टि से ओझल है। इसलिए

मनुष्य की वास्तविक परीक्षा यह है कि वह इस संसार की अपेक्षा आख़िरत को प्राथमिकता दे। किंतु यह केवल वही लोग कर सकते हैं, जिनमें इस संसार में रहते हुए अपनी स्वार्थी इच्छाओं और वासनाओं को नियंत्रित करने का साहस हो।

मनुष्य को वर्तमान संसार में परीक्षा के लिए रखा गया है। इस परीक्षा के लिए अनिवार्य रूप से स्वतंत्रता की आवश्यकता है। यही कारण है कि मनुष्य को ब्रह्मांड के शेष हिस्सों की तरह किसी भी विवशता या मजबूरी के अधीन नहीं रखा गया है। उसके पास विकल्प है कि वह या तो ईश्वर की व्यवस्था का पालन करे या उससे विचलित हो जाए।

लेकिन यह स्वतंत्रता केवल इस दुनिया में उसके जीवनकाल के दौरान किए गए कार्यों पर लागू होती है; यह उसके कार्यों के परिणाम पर लागू नहीं होती। ईश्वर के अपरिवर्तनशील नियम ही मनुष्य का अंतिम भाग्य निर्धारित करेंगे। अपने रिकॉर्ड के आधार पर, मनुष्य स्वयं को शाश्वत स्वर्ग में आनंदपूर्वक रहते हुए पाएगा, अन्यथा वह स्वयं को पूर्ण अभाव और महरूमियत की स्थिति में पाएगा।

यहाँ परीक्षा के लिए

मनुष्य को उसकी परीक्षा की अवधि के लिए बहुत-सी आवश्यक सुविधाएँ दी गई हैं। जैसे ही उसकी परीक्षा पूरी हो जाएगी, सब कुछ उससे वापस ले लिया जाएगा। तब मनुष्य अकेला ईश्वर के सामने खड़ा होगा, अपने परिणाम की प्रतीक्षा करता हुआ—या तो शाश्वत जन्नत, या शाश्वत अभाव की अवस्था।

जब कोई विद्यार्थी परीक्षा कक्ष में बैठा होता है, तो उसके पास अनेक सुविधाएँ होती हैं। उसके ऊपर परीक्षा भवन की छत होती है, लिखने के लिए मेज़ होती है, बैठने के लिए कुर्सी होती है, उत्तर लिखने के लिए क़लम और काग़ज़ होते हैं, और उसकी ज़रूरतों का ध्यान रखने के लिए सहायक भी होते हैं। वह अपनी जगह बैठकर इन सभी सुविधाओं का पूरी स्वतंत्रता से, बिना किसी रोक-टोक के उपयोग करता है।

यदि उसके बैठने के लिए परीक्षा कक्ष न हो, तो वह गर्मी और सर्दी के संपर्क में आ जाएगा। यदि उसके पास मेज़ और कुर्सी न हों, तो वह आराम से बैठ नहीं सकेगा। और यदि क़लम और काग़ज़ न हों, तो उसके लिए उत्तर लिखने का कोई प्रश्न ही नहीं उठेगा।

लेकिन विद्यार्थी को ये सब वस्तुएँ केवल इसलिए मिली होती हैं क्योंकि वह परीक्षा दे रहा होता है। ये सुविधाएँ केवल उतनी ही देर तक रहती हैं, जितनी देर

तक उसकी परीक्षा चलती है। जैसे ही परीक्षा समाप्त होती है, ये सारी चीज़ें उससे ले ली जाती हैं। परीक्षा कक्ष की सीमाओं के भीतर जो स्वतंत्रता उसे दी गई होती है, उससे ऐसा लग सकता है कि ये सब वस्तुएँ उसका अधिकार हैं, लेकिन परीक्षा के समाप्त होते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि ये सब उसे केवल थोड़े समय के लिए, परीक्षा के उद्देश्य से दी गई थीं।

ठीक यही स्थिति इस संसार में मनुष्य की है। यहाँ मनुष्य के पास भी बहुत-सी वस्तुएँ हैं। स्वाभाविक रूप से वह स्वयं को उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार प्रयोग करने के लिए स्वतंत्र समझता है और अपने मनचाहे ढंग से जीवन जीना चाहता है। लेकिन सच्चाई यह है कि इस संसार में मनुष्य के पास जो कुछ भी है, वह उसकी परीक्षा के कारण ही है। ईश्वर ने मनुष्य को इस संसार में परीक्षा के लिए रखा है। इस परीक्षा के लिए उसे बहुत-सी आवश्यक सुविधाएँ दी गई हैं, जो केवल उसकी परीक्षा की अवधि तक ही उसके पास रहेंगी। जैसे ही उसकी परीक्षा पूरी हो जाएगी, सब कुछ उससे छीन लिया जाएगा। उसके बाद मनुष्य अकेला ईश्वर के सामने खड़ा होगा, अपने परिणाम की प्रतीक्षा करता हुआ—या तो हमेशा रहने वाली जन्नत की खुशियाँ, या फिर अंतहीन अंधकार। वह उस यात्री के समान होगा जो रेगिस्तान के बीच में फँस गया हो, या उस व्यक्ति के समान जो अंतरिक्ष के शून्य में भटकने के लिए छोड़ दिया गया हो।

और मनुष्य तथा पृथ्वी पर उसकी परीक्षा की समाप्ति के बीच केवल एक ही चीज़ खड़ी है—मृत्यु की अदृश्य दीवार।

मनुष्य की परीक्षा

इस संसार में मनुष्य का जीवन एक लंबी परीक्षा है। हर व्यक्ति परीक्षा में है; अंतर केवल इतना है कि यह परीक्षा जिन परिस्थितियों में ली जा रही है, वे अलग-अलग हैं।

जीवन एक निरंतर चलने वाली परीक्षा है। यह एक बड़ा विरोधाभास है कि कुछ लोग जीवन का आनंद लेते हैं, जबकि कुछ लोग निरंतर कष्ट में रहते हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि सभी एक ही स्थिति में हैं, क्योंकि उन्हें जिन परिस्थितियों में रखा गया है, उनमें उनके कर्मों और उनकी प्रतिक्रियाओं की जाँच की जा रही है। हर व्यक्ति परीक्षा में है; अंतर केवल परीक्षा की परिस्थितियों का है।

मनुष्य की परीक्षा का एक अन्य पहलू यह है कि ईश्वर ने कुछ को कमज़ोर और दूसरों को शक्तिशाली बनाया है। यहाँ हमेशा शक्तिशाली के आगे झुक जाने और कमज़ोर का शोषण करने का प्रलोभन (लालच) बना रहता है। लेकिन ऐसा करना जहन्नम की ओर जाने का सबसे सुनिश्चित रास्ता है। केवल वही लोग जन्नत के योग्य सिद्ध होंगे, जो परिस्थितियों की परवाह किए बिना यह पहचानते हैं कि सही क्या है। क्योंकि अक्सर ऐसा होता है कि जो कमज़ोर दिखाई देता है, वही सही होता है और जो शक्तिशाली होता है, वही ग़लत।

दूसरे लोग चाहे कितना ही परेशान करने वाला व्यवहार क्यों न करें, सही प्रतिक्रिया यही है कि नरमी और समझदारी से काम लिया जाए। सामने वाला चाहे कितना भी भड़काने की कोशिश करे, इंसान को इंसाफ और निष्पक्षता

का रास्ता नहीं छोड़ना चाहिए।

इंसान अपनी ज़िंदगी के हालात में जैसा बर्ताव करता है, वही तय करेगा कि मौत के बाद उसका ठिकाना कहाँ होगा। जो लोग ताक़तवर के सामने दब जाते हैं और कमज़ोरों पर ज़ुल्म करते हैं, वे जहन्नम की आग में जाएँगे। उन्हें यह याद रखना चाहिए कि हर दिन उनके पास दो रास्ते होते हैं—एक रास्ता जहन्नम की ओर ले जाता है और दूसरा जन्नत की ओर।

मनुष्य की क्षमता का मूल्यांकन

> मनुष्य जो कुछ भी अनुभव करता है, वह इस बात की परीक्षा है कि वह विभिन्न परिस्थितियों पर कैसी प्रतिक्रिया करता है। इन्हीं प्रतिक्रियाओं के आधार पर यह तय किया जाएगा कि वह जन्नत के योग्य है या जहन्नम के।

मनुष्य को पूर्ण स्वतंत्र इच्छा दी गई है, लेकिन किसी भी कार्य को घटित करने की शक्ति केवल ईश्वर के पास है। मनुष्य को पृथ्वी पर केवल परीक्षा के लिए रखा गया है। विभिन्न परिस्थितियों में उसकी प्रतिक्रियाओं की जाँच की जा रही है।

कुछ लोग घटनाओं पर धैर्य, न्याय और विवेक के साथ प्रतिक्रिया करते हैं। उनके ये कर्म उन्हें सम्मान और सफलता दिलाते हैं। कुछ लोग इसके विपरीत व्यवहार करते हैं। उनका आवेश, क्रूरता और सत्य के प्रति अंधापन उनके लिए केवल दोष और अपराध का कारण बनता है। कुछ लोग अपने को ईमान वाला कहते हैं, लेकिन यदि वे दूसरों के प्रति तिरस्कारपूर्ण, छलपूर्ण और द्वेषपूर्ण रवैया अपनाते हैं, तो उनका दावा तुरंत झूठा सिद्ध हो जाता है। ईश्वर विशेष रूप से उनकी सहायता करता है, जिन पर अन्याय किया जाता है।

कुछ लोग सत्य पर होते हुए भी असहाय और अकेले छोड़ दिए जाते हैं, जबकि कुछ लोग सत्य के प्रति अंधे होते हुए भी संसार की हर तरह की सुविधाओं से घिरे रहते हैं। यह स्थिति ऊपर से विरोधाभासी लगती है, पर इसका एक गहरा उद्देश्य है। इसके माध्यम से उन लोगों की पहचान हो जाती है जो केवल बाहरी चमक-दमक से जुड़े रहते हैं और वास्तव में सच्चाई को नकारने वालों की श्रेणी में आ जाते हैं।

मनुष्य जो कुछ भी अनुभव करता है—चाहे वह धन हो या निर्धनता, सफलता हो या असफलता—सब कुछ परीक्षा है। सांसारिक विजय आनंद का कारण नहीं होनी चाहिए और न ही सांसारिक हानि शोक का कारण। विजेता और पराजित दोनों की परीक्षा हो रही है कि वे अपनी स्थिति पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। इन्हीं प्रतिक्रियाओं के आधार पर यह तय होगा कि वे जन्नत के योग्य हैं या जहन्नम के।

केवल एक अवसर

> हमारे पास अपनी योग्यता साबित करने का केवल एक ही मौक़ा है; हम इसे बर्बाद कर सकते हैं या इसका सही उपयोग कर सकते हैं। पृथ्वी पर हमारे पास केवल एक ही जीवन है; हम अपने लिए या तो जन्नती फ़सल उगा सकते हैं या जहन्नमी।

मनुष्य एक अमर प्राणी है। वह अपने समय का एक भाग इस संसार में बिताता है और शेष आख़िरत में। यह संसार कर्म करने के लिए है; अगले संसार में हम अपने कर्मों का फल भोगेंगे।

आख़िरत के लिए कर्म करने का अवसर हमें केवल इसी संसार में प्राप्त है। उसके बाद हम कर्म करने में सक्षम नहीं होंगे; बल्कि अपने कर्मों के परिणाम भुगतने के लिए बाध्य होंगे। पृथ्वी पर हमारे पास बहुत कम समय है। जो लोग कभी हमारे बीच थे, वे आज नहीं रहे। इसी प्रकार एक दिन हमें भी जीवितों की धरती से हटा लिया जाएगा। हमारा जीवन समाप्त होगा और हमें अपने रब के सामने न्याय के लिए प्रस्तुत किया जाएगा।

यह जीवन हमारे लिए पहला और अंतिम अवसर है, जिसमें हम अपने लिए एक शाश्वत भविष्य बना सकते हैं। पृथ्वी पर हमारे पास केवल एक ही जीवन है और इसी जीवन में हमें अपनी योग्यता सिद्ध करनी है। हमें यहाँ परीक्षा में रखा गया है और यह परीक्षा निश्चित रूप से निर्णायक परिणाम तक पहुँचेगी। हम अपने कर्मों के परिणामों से बच नहीं सकेंगे।

हर गुज़रता हुआ क्षण निर्णायक है, क्योंकि जो समय बीत गया वह कभी वापस नहीं आएगा। हमारे पास अपने मूल्य को सिद्ध करने का केवल एक अवसर है; हम इसे व्यर्थ कर सकते हैं या इसका सही उपयोग कर सकते हैं। पृथ्वी पर हमारे पास केवल एक ही जीवन है; हम अपने लिए या तो जन्नती फ़सल उगा सकते हैं या जहन्नमी।

व्यक्तित्व का विकास

मनुष्य के मस्तिष्क में प्रतिदिन जो विचार आते हैं, वही उसके चरित्र का निर्माण करते हैं। सकारात्मक विचार एक सकारात्मक व्यक्तित्व बनाते हैं। नकारात्मक विचार एक नकारात्मक व्यक्तित्व बनाते हैं।

अनुभव बताता है कि शिशु अवस्था में मनुष्य मासूमियत का प्रतीक होता है। लेकिन वर्षों के बीतने के साथ, उसके व्यक्तित्व में विभिन्न प्रकार की बुराइयाँ और विकृतियाँ घर कर लेती हैं और उसके चरित्र का हिस्सा बन जाती हैं। ऐसे में यह प्रश्न उठता है कि कोई अपने व्यक्तित्व या चरित्र को कैसे विकसित कर सकता है।

व्यक्तित्व या चरित्र का विकास वास्तव में उसी स्वाभाविक चरित्र को सुरक्षित रखना है, जिसके साथ मनुष्य पैदा हुआ था। व्यक्ति का प्रयास यह होना चाहिए कि समय के साथ उसके चरित्र पर जो बनावटी परदे पड़ गए हैं, उन्हें हटाता रहे, ताकि उसकी वास्तविक और निर्मल प्रकृति फिर से प्रकट हो सके। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। लोहा एक शुद्ध धातु है, लेकिन पानी के संपर्क में आने से उस पर ज़ंग लग जाती है। यह ज़ंग केवल एक बाहरी परत होती है। यदि उसे रगड़ कर साफ कर दिया जाए, तो लोहा अपनी मूल अवस्था में फिर प्रकट हो जाता है।

यह प्रक्रिया प्रतीकात्मक रूप से एक मनोवैज्ञानिक सत्य की ओर संकेत करती

है। कोई व्यक्ति कोई बुरा काम करता है और फिर तुरंत उसका एहसास कर लेता है। वह तौबा (क्षमा-याचना) करता है और उसका दिल साफ़ हो जाता है। लेकिन यदि वह लगातार एक के बाद एक बुराई करता चला जाए और न आत्मचिंतन करे, न क्षमा माँगे, तो पाप का प्रभाव उसके दिल से नहीं मिटता। परिणामस्वरूप वह धीरे-धीरे एक संवेदनहीन व्यक्ति बन जाता है। वह बुराई में जीने लगता है और फिर कोई भलाई उसे ऊपर उठाने या संतुलित करने वाली नहीं रहती।

आधुनिक मनोवैज्ञानिक अध्ययनों ने इस बात को और स्पष्ट कर दिया है। मनुष्य के मस्तिष्क के तीन प्रमुख हिस्से होते हैं, जो जन्म से ही मौजूद होते हैं—चेतन मन, अवचेतन मस्तिष्क और अचेतन मन। जब भी कोई विचार मस्तिष्क में प्रवेश करता है, वह सदा के लिए उसका हिस्सा बन जाता है। और जैसा कि हम जानते हैं, मस्तिष्क ही व्यक्तित्व का दूसरा नाम है। इसका अर्थ यह है कि जो विचार मस्तिष्क में प्रवेश करता है, वह सदा के लिए व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है। इसलिए बाद में उसे पूरी तरह निकाल देना संभव नहीं रहता।

जब भी कोई विचार—सकारात्मक या नकारात्मक—मन में आता है, तो वह पहले चेतन मन, अर्थात् जीवित स्मृति में प्रवेश करता है। इसके बाद, जब व्यक्ति रात को सोता है, तो एक स्वाभाविक प्रक्रिया के अंतर्गत वह विचार चेतन मस्तिष्क से निकलकर अवचेतन मस्तिष्क में चला जाता है। इस चरण में मनुष्य का उस विचार पर केवल पचास प्रतिशत नियंत्रण होता है। शेष पचास प्रतिशत उसके नियंत्रण से बाहर होता है। फिर जब वह अगली रात सोता है, तो वह विचार आगे बढ़कर अचेतन मस्तिष्क में प्रवेश कर जाता है। जब ऐसा हो जाता है, तो वह विचार पूरी तरह मनुष्य के सचेत नियंत्रण से बाहर हो जाता है।

मनुष्य के मस्तिष्क में प्रतिदिन आने वाले विचार ही उसके चरित्र का निर्माण करते हैं। जैसे विचार होंगे, वैसा ही व्यक्तित्व होगा। सकारात्मक विचार एक सकारात्मक व्यक्तित्व बनाते हैं। इसके विपरीत, यदि विचार नकारात्मक हों, तो चरित्र लगातार अधिक से अधिक नकारात्मक होता चला जाएगा।

आजकल बहुत से लोग नकारात्मक सोच में डूबे हुए हैं। कोई व्यक्ति ऊपर से सकारात्मक बातें करता हुआ दिखाई दे सकता है, लेकिन यदि आप उससे अधिक बातचीत करें और उसके व्यक्तित्व को समझने का प्रयास करें, तो आपको पता चलेगा कि वह भी अधिकांश लोगों की तरह नकारात्मक है। अधिकतर लोग नकारात्मकता के क़ब्रिस्तान में जी रहे हैं, जबकि उन्हें इसका एहसास भी नहीं है। इस मामले में 'धार्मिक' और 'ग़ैर-धार्मिक' लोगों में प्रायः कोई अंतर नहीं होता।

सबसे बुरा चरित्र नकारात्मक चरित्र होता है और सबसे उत्तम चरित्र सकारात्मक चरित्र होता है। इसलिए प्रश्न यह है कि सकारात्मक व्यक्तित्व का विकास कैसे किया जाए। सही तरीका यह है कि जैसे ही कोई नकारात्मक विचार मस्तिष्क में आए, उसे तुरंत समाप्त कर दिया जाए। फिर एक विशेष पद्धति से उस नकारात्मक विचार को सकारात्मक में बदल दिया जाए। उदाहरण के लिए, यदि आपको किसी पर क्रोध आ जाए, तो तुरंत उसे क्षमा कर दें, ताकि क्रोध प्रतिशोध का रूप न ले और आपका चरित्र क्रोध और घृणा जैसी नकारात्मक विशेषताओं से सुरक्षित रह सके। यदि आपको किसी की सफलता पर ईर्ष्या होने लगे, तो उसके लिए दुआ और उसकी भलाई की कामना करें। इस प्रकार ईर्ष्या आपके चरित्र में प्रवेश नहीं करेगी।

हमें जो करना चाहिए वह यह है कि जैसे ही कोई नकारात्मक विचार (Negative

Thought) मस्तिष्क में आए, उसे तुरंत सकारात्मक (Positive) विचार में बदल देना चाहिए। यदि इसमें देरी होती है, तो नकारात्मक सोच बहुत तेज़ी से हमारे अवचेतन मस्तिष्क (Subconscious Mind) में और कुछ समय बाद अचेतन मस्तिष्क (Unconscious Mind) में प्रवेश कर जाती है।

हालाँकि, बहुत कम लोग नकारात्मक विचारों को सकारात्मक विचारों में बदल पाते हैं। इस कारण उन्हें एक मुर्दा और नकारात्मक व्यक्तित्व के बोझ तले दबने की भयानक क़ीमत चुकानी पड़ती है। नकारात्मक व्यक्तित्व एक जहन्नमी व्यक्तित्व है और सकारात्मक व्यक्तित्व एक जन्नती व्यक्तित्व है। यदि आप खुद को इस विनाशकारी स्थिति से बचाना चाहते हैं, तो ऊपर बताए गए आंतरिक सुधार और सफाई (Cleansing) के तरीक़े का अभ्यास करें और इसे अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएँ। केवल तभी आप एक सकारात्मक व्यक्तित्व विकसित करना जारी रख सकते हैं। इस समस्या का इसके अलावा और कोई समाधान नहीं है।

फूल और काँटे

> जो व्यक्ति अपने चरित्र का निर्माण सकारात्मक रूप से करता है, उसका जीवन दो अवधियों या चरणों में विभाजित है: मृत्यु से पहले की अवधि (सामान्यतः अधिकतम 100 वर्ष) और मृत्यु के बाद की अवधि (जो अनंत काल तक चलती है)। पहले चरण का जीवन इस संसार में बीतता है, और दूसरे चरण का जीवन परलोक (आख़िरत) की दुनिया में।

आज की दुनिया—यह वर्तमान संसार—एक घने जंगल की तरह है। यहाँ फूल भी हैं और उनके साथ काँटे भी। आने वाली दुनिया में—यानी परलोक में—'फूलों'

और 'काँटों' को एक-दूसरे से अलग कर दिया जाएगा। इसके बाद एक शाश्वत संसार उभरेगा, जिसके एक भाग में केवल 'काँटे' (जहन्नम) होंगे, और दूसरे भाग में केवल 'फूल' (जन्नत)।

आज के संसार में हर व्यक्ति को अपनी हमेशा रहने वाली क़िस्मत बनाने का अवसर मिला हुआ है। इस संसार में उसके जीवन का रिकॉर्ड यह तय करेगा कि उसे काँटों से भरे संसार में बसाया जाएगा या हमेशा रहने वाले बागों में।

लोगों को इन दो समूहों (Groups) में बाँटने की प्रक्रिया इस दुनिया में लगातार चल रही है। अपने जीवन के रिकॉर्ड के माध्यम से (या दूसरे शब्दों में, उस चरित्र के आधार पर जो वे इस दुनिया में बना रहे हैं), हर व्यक्ति मानो यह घोषणा कर रहा है कि वह मृत्यु के बाद किस समूह में शामिल होने के योग्य है—वह समूह जिसे काँटों के बीच बसाया जाएगा या वह जिसे फूलों के बीच जगह दी जाएगी।

इस वर्तमान संसार की परिस्थितियाँ ही व्यक्तित्व के इस विकास का माध्यम हैं। हर व्यक्ति इसी प्रक्रिया से गुज़र रहा है। कोई अपने लिए काँटों जैसा व्यक्तित्व विकसित कर रहा है, तो कोई फूलों जैसा चरित्र बना रहा है। आज की दुनिया में लोगों के ये दो समूह अलग-अलग और स्पष्ट दिखाई नहीं देते। हालाँकि, कल की दुनिया (परलोक) में, वे एक-दूसरे से अलग कर दिए जाएंगे। एक समूह को हमेशा रहने वाली जन्नत में प्रवेश दिया जाएगा, और दूसरे समूह को हमेशा रहने वाली जहन्नम के हवाले कर दिया जाएगा।

वर्तमान संसार में हर व्यक्ति नकारात्मक अनुभवों से गुज़रता है। यदि कोई व्यक्ति हर अप्रिय अनुभव को आदतन नकारात्मक रूप में ही लेता है, तो वह अपने भीतर एक नकारात्मक व्यक्तित्व विकसित कर लेता है। इसके विपरीत, यदि कोई

व्यक्ति नकारात्मक अनुभव को सकारात्मक में बदल ले, तो यह सकारात्मक चरित्र बनाने का सर्वोत्तम तरीक़ा है।

उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति आपके साथ बदतमीज़ी करता है, आप पर ज़ुल्म करता है, आपसे ग़ुस्सा करता है और आपको नुकसान पहुँचाता है। अब आपके सामने दो विकल्प होते हैं। पहला यह कि आप भी उसके साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा उसने आपके साथ किया। यदि उसने आपको गाली दी है, तो आप भी उसे गाली दें। यदि उसने आपको परेशान किया है, तो आप भी उसे परेशान करें। यदि उसने आपको चोट पहुँचाई है, तो आप भी उसे चोट पहुँचाने का निर्णय लें। यदि वह आप पर चिल्लाया है, तो आप भी उस पर चिल्लाएँ।

जो व्यक्ति इस प्रकार प्रतिक्रिया देता है, वह अपने भीतर एक नकारात्मक व्यक्तित्व विकसित करता है। उसने अपने दिल में काँटों की फ़सल बो दी है, इसलिए उसका व्यक्तित्व काँटेदार बन जाता है। मृत्यु के बाद, अगले संसार में, वह काँटेदार व्यक्तित्व के साथ उठाया जाएगा और उसे काँटों से भरे जंगल—अर्थात जहन्नम—में डाल दिया जाएगा, जहाँ वह सदा पछतावे और दुःख की अवस्था में रहेगा।

इसके विपरीत वह व्यक्ति है, जो दूसरों के नकारात्मक व्यवहार का सकारात्मक उत्तर देता है। यदि कोई उसे गाली देता है, तो वह बदले में गाली नहीं देता, बल्कि उसे माफ़ कर देता है। यदि कोई उस पर ज़ुल्म करता है, तो वह वैसा ही करने से इंकार कर देता है। ऐसा व्यक्ति मानो काँटों के बीच एक फूल की तरह जीवन बिताता है। उसने इस संसार में अपने भीतर फूल-जैसा चरित्र विकसित किया। अगले संसार में, मृत्यु के बाद के जीवन में, उसे फूलों के बाग़—जन्नत—में रहने की अनुमति दी जाएगी।

मानव मस्तिष्क के दो मुख्य भाग होते हैं—चेतन (Conscious) और अचेतन (Unconscious)। जब भी कोई विचार हमारे मस्तिष्क में उत्पन्न होता है, तो वह सबसे पहले चेतन मस्तिष्क में प्रवेश करता है। इसके बाद वह धीरे-धीरे आगे बढ़ता हुआ अचेतन मस्तिष्क में पहुँच जाता है। अचेतन मस्तिष्क वह भाग है, जहाँ हर विचार सदा के लिए सुरक्षित हो जाता है, चाहे वह हमारे सचेत नियंत्रण में भी न रहे।

यदि आप फूलों जैसा चरित्र पाना चाहते हैं, तो जैसे ही आपके चेतन मस्तिष्क में कोई नकारात्मक विचार आए, आपको तुरंत अपनी सोचने की प्रक्रिया को सक्रिय करना चाहिए और उसे सकारात्मक विचार में बदल देना चाहिए। ऐसा करने से वह विचार आपके अचेतन मस्तिष्क के गोदाम में एक सकारात्मक वस्तु के रूप में जमा होगा, न कि नकारात्मक।

उदाहरण के लिए, यदि आपके मस्तिष्क में घृणा से भरा विचार आए, तो उसे समाप्त कर प्रेम के विचार में बदल दें। यदि बदले की भावना वाला विचार आए, तो उसे कृतज्ञता के विचार में परिवर्तित कर दें। यदि कोई विचार आपके अहंकार को उकसाए और आपको गर्व से भर दे, तो उसे विनम्रता के विचार में बदल दें। यदि कोई स्वार्थपूर्ण विचार आए, तो उसे निस्वार्थता के विचार में परिवर्तित कर दें। और इसी प्रकार आगे।

जो व्यक्ति इस प्रकार अपने चरित्र का निर्माण करता है, उसका मस्तिष्क सकारात्मकता का भंडार बन जाता है। ऐसा व्यक्ति नकारात्मकता से मुक्त हो जाता है। केवल ऐसा ही सकारात्मक व्यक्तित्व मृत्यु के बाद शाश्वत संसार में जन्नत में स्थान पाएगा, जहाँ वह सदा सुख और आनंद का जीवन व्यतीत करेगा।

यह विरोधाभास क्यों?

मनुष्य को वर्तमान संसार में उपलब्ध अवसरों का उपयोग ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना के अनुसार करना है, ताकि वह जन्नत में शाश्वत आनंद के बीच जीवन बिताने के योग्य बन सके।

पर्सी बिश शेली (1792–1822) एक अंग्रेज़ कवि थे। उन्होंने एक बार कहा था: "हमारे सबसे मधुर गीत वे होते हैं, जो सबसे दुखद विचारों की बात करते हैं।" यह रोज़मर्रा के अनुभव की बात है। बहुत-से लोग दुखद कहानियाँ सुनना पसंद करते हैं। लोकप्रिय उपन्यास प्रायः हास्य से अधिक त्रासदी होते हैं। इसी प्रकार अक्सर वही गायक लोकप्रिय होते हैं, जो उदास गीत गाते हैं।

ऐसा क्यों है? दुखद कविताएँ या दुखद कहानियाँ लोगों के दिल के तारों को क्यों छू लेती हैं?

इसका कारण यह है कि प्रत्येक व्यक्ति व्यवहारिक रूप से वंचना और कुंठा की मानसिकता में जीवन बिताता है। ऐसी स्थिति में प्रसन्नता की कहानी उसे अवास्तविक-सी लगती है, जबकि दुख की कहानी उसे अधिक स्वाभाविक प्रतीत होती है।

यदि इस विषय पर और गहराई से विचार किया जाए, तो यह स्पष्ट होगा कि मनुष्य आनंद की खोज करने वाला प्राणी है। इस विशाल ब्रह्मांड में मनुष्य एक अद्भुत सृष्टि है। वह एकमात्र ऐसा प्राणी है, जिसके भीतर आनंद का अत्यंत सूक्ष्म और तीव्र बोध है। आनंद का रस लेना मनुष्य की विशिष्ट विशेषता है। ब्रह्मांड में

असंख्य प्राणी हैं, लेकिन इस प्रकार से आनंद का अनुभव करने की क्षमता केवल मनुष्य को प्राप्त है।

मनुष्य के लिए सोचना भी आनंद हो सकता है, देखना, सुनना, बोलना, खाना, पीना, सूँघना, छूना, यहाँ तक कि नंगे पाँव घास पर चलना भी आनंद का स्रोत बन सकता है। लेकिन यहाँ एक विचित्र विरोधाभास है। मनुष्य में आनंद का अपार सामर्थ्य है, परंतु इस संसार में उसके लिए पूर्ण आनंद का अनुभव संभव नहीं है।

एक बार मैं कश्मीर गया। पहलगाम के निकट पहाड़ों से उतरती हुई एक नदी बह रही थी। उसका पानी अत्यंत स्वच्छ था। जब मैंने उसे देखा, तो मुझे उसे पीने की इच्छा हुई। मैंने एक गिलास पानी पिया। वह अद्भुत था, किसी भी अन्य पेय से बेहतर। फिर मैंने दूसरा गिलास पिया, फिर तीसरा, यहाँ तक कि मैंने छह गिलास पानी पी लिया। छठा गिलास पीने के बाद भी मेरा मन और पीना चाहता था, लेकिन शरीर ने साथ नहीं दिया। तभी मुझे तेज़ सिरदर्द हो गया। दर्द इतना अधिक था कि मुझे तुरंत लौटना पड़ा। मैं श्रीनगर पहुँचा। उस दिन मुझे किसी के यहाँ रात्रि-भोज में जाना था, जहाँ कई लोग आमंत्रित थे। लेकिन सिरदर्द इतना तीव्र था कि मैं उस भोज में सम्मिलित नहीं हो सका।

यही स्थिति अन्य सभी आनंदों के साथ भी होती है। मनुष्य धन कमाता है, शक्ति प्राप्त करता है, अपनी पसंद से विवाह करता है, भव्य मकान बनाता है, अनेक प्रकार की विलासिता की वस्तुएँ इकट्ठी करता है। किंतु यह सब प्राप्त कर लेने के बाद भी उसे यह अनुभव होता है कि किसी भी आनंददायक वस्तु से पूर्ण और निरंतर संतोष प्राप्त करने में एक निर्णायक बाधा है। चाहे उसके पास कितनी ही सुविधाएँ और भौतिक साधन क्यों न हों, वह पूर्ण और स्थायी शांति व आनंद प्राप्त नहीं कर पाता।

मनुष्य की भौतिक सुख-सुविधाओं की इच्छा असीमित है, किंतु उनका उपयोग करने की उसकी क्षमता सीमित है। यह सीमा सदैव मनुष्य और आनंद की वस्तुओं के बीच दीवार बनकर खड़ी रहती है। सब कुछ प्राप्त कर लेने के बाद भी मनुष्य निराश और कुंठित रहता है। शरीर की दुर्बलता, आयु के साथ शक्ति का क्षय, बीमारी, दुर्घटनाएँ और अंततः मृत्यु—ये सब उसकी इच्छाओं को लगातार नकारती रहती हैं। मनुष्य जब आनंद की वस्तुएँ पाता है, तब वह उन्हें भोगना चाहता है, लेकिन शीघ्र ही उसकी शक्ति की सीमा आ जाती है और वह थक कर चूर हो जाता है। अंत में मृत्यु उसके सारे स्वप्नों और इच्छाओं को दफ़ना देती है।

यह विरोधाभास मूलभूत नहीं है। यह वस्तुओं की व्यवस्था में अंतर के कारण उत्पन्न होता है। यह निर्धारित किया गया है कि मनुष्य को मृत्यु से पहले के जीवन में केवल सीमित रूप में आनंद का परिचय दिया जाएगा, और मृत्यु के बाद के जीवन में उसे उन आनंदों की पूर्ण प्राप्ति होगी। यह कोई संयोग नहीं है, बल्कि प्रकृति की योजना का हिस्सा है। यही व्यवस्था संपूर्ण प्रकृति में पाई जाती है। इस संसार में मनुष्य जो भी सफलता प्राप्त करता है, वह इसी सिद्धांत के अंतर्गत होती है।

एक किसान पहले बीज बोता है, फिर फसल काटता है। कोई पौधा पहले नर्सरी में लगाया जाता है, फिर उससे फल प्राप्त होते हैं। लोहार पहले लोहे को गलाता है, फिर उससे इस्पात बनाता है। अर्थात इस संसार में हर वस्तु विभिन्न चरणों से गुज़रती है। पहले आरंभिक अवस्था आती है, फिर परिपूर्णता। इस प्राकृतिक नियम का कोई अपवाद नहीं है।

यही बात मनुष्य के साथ भी लागू होती है। मनुष्य को आनंद की असीमित क्षमता दी गई है, लेकिन असीम आनंद के साधन उसके जीवन के दूसरे चरण में रखे गए हैं—मृत्यु के बाद के संसार में। इस संसार में वह केवल आनंद की इच्छा और

खोज की क्षमता को पहचानता है। यदि उसने यहाँ धर्मपरायण जीवन बिताया, तो अगले संसार में उसे उन आनंदों की पूर्ण प्राप्ति होगी।

अर्थात इस संसार में, मृत्यु से पहले, वह सिर्फ़ आनंद की तृष्णा को अनुभव करेगा, और मृत्यु के बाद, जन्नत में, वह आनंद का पूर्ण अनुभव करेगा।

ईश्वर ने अपनी सृष्टि-निर्माण योजना के अनुसार इस संसार में जन्नत के आनंदों का एक प्रारंभिक परिचय दिया है, ताकि मनुष्य समझ सके कि यदि वह शाश्वत और पूर्ण आनंद चाहता है, तो उसे इसके योग्य बनने के लिए प्रयास करना चाहिए।

जन्नत के योग्य बनने के लिए मनुष्य को अपने आपको एक शुद्ध आत्मा बनाना होगा। उसे लोभ, स्वार्थ, ईर्ष्या, बेईमानी, झूठ, क्रोध, प्रतिशोध, घृणा और अन्य नकारात्मक भावनाओं से स्वयं को बचाना होगा। उसे एक उच्च, पूर्णतः सकारात्मक चरित्र विकसित करना होगा, जो उसे ईश्वर के पड़ोस में रहने योग्य बना दे। उसे एक फ़रिश्ते जैसे या दिव्य व्यक्तित्व में परिवर्तित होना होगा।

मनुष्य का जीवन दो चरणों में बँटा है—मृत्यु से पहले और मृत्यु के बाद। पहला चरण बहुत छोटा है, जबकि दूसरा चरण अनंत है। यदि मनुष्य के जीवन को केवल पहले चरण के आधार पर देखा जाए, तो वह एक निरर्थक त्रासदी प्रतीत होगा। किंतु यदि उसे मृत्यु के बाद के चरण के प्रकाश में देखा जाए, तो वह अर्थपूर्ण बन जाता है।

इस सृष्टि-निर्माण योजना के अनुसार मनुष्य एक अत्यंत निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। उसके सामने दो विकल्प हैं। एक यह कि वह इस संसार में उपलब्ध अवसरों का उपयोग ईश्वर की योजना के अनुसार करे और जन्नत के योग्य बन जाए। दूसरा यह कि वह इस संसार में ग़फ़लत की ज़िंदगी जिए और अगले जीवन में सदा के लिए आनंद से वंचित हो जाए।

निष्कर्ष

> एक शाश्वत सिद्धांत है: जैसा बोओगे, वैसा ही काटोगे। मृत्यु से पहले का जीवन बीज बोने का समय है, और मृत्यु के बाद का जीवन फसल काटने का समय।

मनुष्य का जीवन मृत्यु से पहले और मृत्यु के बाद के काल में विभाजित है। सीमित काल परीक्षा के लिए है और अनंत काल परीक्षा के परिणाम पाने के लिए। जो लोग परीक्षा में सफल होंगे, उन्हें जन्नत मिलेगी, और जो असफल होंगे, उन्हें जहन्नम।

यही ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना है। किंतु जन्नत और जहन्नम का दर्जा समान नहीं है। सृष्टि का वास्तविक उद्देश्य जन्नत के लोगों का चयन है। जहन्नम के लोग सृष्टि का मुख्य उद्देश्य नहीं हैं, वे केवल तुलनात्मक घटक हैं।

मनुष्य को इस योजना से अवगत कराने के लिए ईश्वर ने उसके स्वभाव में ही एक गहरी बेचैनी रख दी है। लगभग हर व्यक्ति इस संसार में पूर्ण संतोष नहीं पा सकता, चाहे वह अमीर हो या गरीब, शक्तिशाली हो या दुर्बल। यह असंतोष इस बात का संकेत है कि हमारा वास्तविक गंतव्य कहीं और है—आख़िरत में।

इसलिए इस संसार की कठिनाइयाँ, रोग, दुर्घटनाएँ, कष्ट और मृत्यु—ये सब हमें याद दिलाते हैं कि हम यहाँ आदर्श संसार नहीं बना सकते। यह संसार सत्य की खोज के लिए प्रेरित करता है।

कुछ लोग दूसरों के लिए चेतावनी के संकेत बन जाते हैं, जैसे अपंग हो जाना या किसी असाध्य रोग से पीड़ित होना। ऐसे लोग दूसरों को याद दिलाते हैं कि यह संसार स्थायी और आदर्श नहीं है।

ऐसे लोगों के लिए खुशख़बरी है कि क़यामत के दिन उनकी छोटी-छोटी नेकियाँ भी स्वीकार की जाएँगी। उनका धैर्य और ईश्वर की रज़ा पर समर्पण ही उनके लिए पर्याप्त होगा।

आज का संसार जन्नत का एक छोटा-सा नमूना है। जन्नत इस संसार का पूर्ण और आदर्श रूप है। इस संसार में जो नेमतें अपूर्ण हैं, जन्नत में वे पूर्ण होंगी। यह संसार अस्थायी है, जन्नत शाश्वत है। यहाँ दुख और भय हैं, वहाँ नहीं।

जहन्नम जन्नत का पूर्ण विपरीत है। वहाँ इस संसार के सारे कष्ट एकत्रित हो जाएँगे, और उससे भी अधिक।

मृत्यु से पहले और बाद के जीवन का संबंध बीज और फसल जैसा है। जैसा बोओगे, वैसा ही काटोगे।

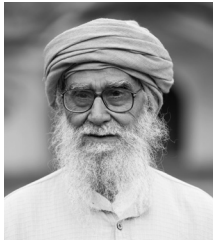

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ (1925–2021) एक इस्लामी विद्वान, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और शांति दूत थे। उन्होंने 200 से अधिक पुस्तकों की रचना की और हज़ारों व्याख्यान रिकॉर्ड किए, जिनमें आधुनिक शैली और तर्कसंगत भाषा में इस्लाम की व्याख्या प्रस्तुत की गई। उनका अंग्रेज़ी अनुवाद The Quran अपनी सरलता, स्पष्टता और समकालीन शैली के कारण व्यापक रूप से सराहा गया है।

उन्होंने वर्ष 2001 में सेंटर फ़ॉर पीस एंड स्पिरिचुएलिटी (CPS इंटरनेशनल) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य लोगों की सोच को ईश्वर-केंद्रित जीवन की ओर मोड़ना और इस्लाम को उसके वास्तविक स्वरूप में प्रस्तुत करना था, जो शांति, आध्यात्मिकता और सह-अस्तित्व के सिद्धांतों पर आधारित है।

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान ने 21 अप्रैल 2021 को नई दिल्ली, भारत में इस संसार से विदा ली। किंतु उनकी बौद्धिक और आध्यात्मिक विरासत CPS International के माध्यम से आज भी आगे बढ़ रही है।

www.quran.me www.goodwordquran.com
www.mwkhan.com www.cpsglobal.org

भूमिका (Intro Text)

ईश्वर ने वर्तमान संसार को चयन-स्थल के रूप में बनाया है। जो लोग अपनी स्वतंत्रता पर नियंत्रण रखते हैं, बिना किसी दबाव के सत्य के सामने झुकते हैं और सिद्धांतों पर आधारित जीवन जीते हैं, वे मृत्यु के बाद जन्नत में बसाए जाएँगे।

पिछला कवर (Back Cover)

ईश्वर ने वर्तमान संसार को एक चयन-स्थल बनाया है। उसने मनुष्य के जीवन को दो कालों में विभाजित किया है—मृत्यु से पहले का काल परीक्षा के लिए और मृत्यु के बाद का काल पुरस्कार या दंड के लिए। इस संसार की परिस्थितियाँ मनुष्य के लिए एक परीक्षा-पत्र का काम करती हैं। यहाँ हर क्षण मनुष्य की परीक्षा हो रही है। हर व्यक्ति के शब्द और कर्म यहाँ दर्ज किए जा रहे हैं। इसी अभिलेख के आधार पर यह निर्णय होगा कि कौन जन्नत में बसने के योग्य है और कौन नहीं।

जो लोग अपनी स्वतंत्रता को सीमित रखते हैं, बिना किसी बाध्यता के सत्य के सामने झुकते हैं और सिद्धांतपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं, वे जन्नत में बसाए जाएँगे। इसके विपरीत, जो लोग अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग करते हैं, वे क़यामत के दिन अस्वीकार कर दिए जाएँगे।

ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना

ईश्वर ने वर्तमान संसार को एक चयन-स्थल बनाया है। उसने मनुष्य के जीवन को दो चरणों में विभाजित किया है—मृत्यु से पहले का चरण परीक्षा के लिए और मृत्यु के बाद का चरण पुरस्कार या दंड के लिए। इस संसार की परिस्थितियाँ मनुष्य के लिए एक परीक्षा-पत्र का काम करती हैं। यहाँ हर क्षण मनुष्य की परीक्षा हो रही है। हर व्यक्ति के शब्द और कर्म यहाँ दर्ज किए जा रहे हैं। इसी अभिलेख के आधार पर यह निर्णय होगा कि कौन जन्नत में बसने के योग्य है और कौन नहीं।

जो लोग अपनी स्वतंत्रता को सीमित रखते हैं, बिना किसी बाध्यता के सत्य के सामने झुकते हैं और सिद्धांतपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं, वे जन्नत में बसाए जाएँगे। इसके विपरीत, जो लोग अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग करते हैं, वे क़यामत के दिन अस्वीकार कर दिए जाएँगे।

Goodword Books
CPS International